Godda College, Godda

Name of the teacher	Course	Sem	Subject	Title	Mode
Pankaj kumar	B.Ed	II	TC-201	प्रमुख शिक्षण विधियाँ	Pdf

P.Kumar
14/04/2020

➢ स्वाध्याय का अनुसरण
स्वाध्याय द्वारा अर्जित ज्ञान
जमापूँजी है। डाल्टन की

प्रमुख शिक्षण विधियाँ

आगमन विधि एकनबजपअम इमजीवक ब (अरस्तु) –

➢ आगमन विधि मे अनुभवों, प्रयोगो तथा उदाहरणों का विस्तृत अध्ययन करके नियम बनाये जाते है। इस विधि द्वारा शिक्षण करते समय शिक्षक बालको के समक्ष कुछ विशेष परिस्थितियों एवं उदाहरण प्रस्तुत करता है। इन उदाहरणो के आधार पर बालक तार्किक ढग से विचार विमर्श करते हुए किसी विशेष सिद्धात, नियम अथवा सुत्र पर पहुँचते है।

➢ नियमो, सुत्रो आदि का प्रतिपादन करते समय बालक अपने अनुभवों, मानसिक शक्तियो तथा पूर्व ज्ञान का प्रयोग करता है।

➢ यह एक सामान्य अनुमान है कि कोई बालक कुछ विशेष परिस्थितियों या उदाहरणों को देखकर या अनुभव करके उनमे पाई जाने वाली एकरुपता को निष्कर्ष के रुप में अपना लेता है। इसलिए इस विधि को सामान्यानुमान विधि एकनबजपअम इमजीवक कहा जाता है।

➢ यग ,त्वनदह के अनुसार "आगमन विधि मे बालक विभिन्न स्थूल तथ्यों ,ब्वदबतमजम बिजेद्ध के आधार पर अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग करते हुए स्वयं किसी विशेष सिद्धात, नियम अथवा सुत्र पर पहुँचते है।

➢ आगमन विधि द्वारा शिक्षण करते समय उदाहरणो से नियमों की ओर विशेष से सामान्य की ओर एवं स्थूल से सुक्ष्म की ओर अग्रसर होते है।

आगमन विधि के गुण एवं विशेषताएँ –

➢ यह एक वैज्ञानिक विधि है क्योंकि इस विधि द्वारा अर्जित ज्ञान प्रत्यक्षो, तथ्यो पर आधारित होता है।

➢ इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक स्थाई होता है। इससे बालको की आलोचनात्मक, निरीक्षण एवं तर्क शक्ति का विकास होता है।

➢ यह छोटी कक्षाओ के लिए अति उपयोगी एवं उपयुक्त विधि है।

➢ यह विधि मनोवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें मनोविज्ञान के विभिन्न महत्वपूर्ण सिद्धान्तो का अनुकरण किया जाता है।

- ➢ बालकों को स्वयं कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। और इसमें आत्म निरीक्षण तथा आत्म विश्वास की वृद्धि होती है।

निगमन विधि –

- ➢ निगमन विधि आगमन विधि के विपरीत है इस विधि में निगमन तर्क का प्रयोग किया जाता है।
- ➢ व्यावहारिक रूप में प्रत्येक नियम अथवा सूत्र को सत्यापित करना असम्भव ही होता है।
- ➢ निगमन विधि में अभिधारणाओं [illegible] आधारभूत तथ्यों तथा स्वयंसिद्धियों [illegible] की सहायता ली जाती है।
- ➢ निगमन विधि में सूक्ष्म से स्थूल की ओर सामान्य से विशिष्ट की ओर प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर या नियम से उदाहरण की ओर अग्रसर होते है।

निगमन विधि के गुण एव विशेषताएँ –

- ➢ निगमन विधि द्वारा बालकों की स्मरण शक्ति विकसित होती है क्योंकि इस विधि का प्रयोग करते समय बालकों को अनेक सूत्र याद करने पड़ते है।
- ➢ इस विधि द्वारा ज्ञानार्जन की गति तीव्र होती है क्योंकि बालक समस्या हल करते समय सीधे सूत्र का प्रयोग करते है।
- ➢ इस विधि का प्रयोग करने पर शिक्षक और शिक्षार्थी दोनो को कम परिश्रम करना पड़ता है।
- ➢ इस विधि द्वारा कम समय में अधिक ज्ञान प्रदान किया जा सकता है।
- ➢ इस विधि के प्रयोग से बालक अभ्यास कार्य शीघ्रता तथा आसानी से कर सकते है।
- ➢ यह विधि संक्षिप्त होने के साथ-साथ व्यवहारिक भी है।
- ➢ आगमन एव निगमन विधि मे सम्बंध –
- ➢ वास्तव रूप मे आगमन एव निगमन विधि एक दूसरे के पुरक है।
- ➢ प्रारम्भ मे आगमन विधि द्वारा उदाहरणो की सहायतासे नियमो तथा सुत्रों का प्रतिपादन करना उसके बाद निगमन विधि द्वारा उनका उपयोग तथा अभ्यास करना चाहिए।
- ➢ आगमन विधि से सुत्रों तथा नियमो को प्रतिपादित करने, तत्पश्चात निगमन विधि से आगे बढ़ने तथा अभ्यास करने की प्रक्रिया को आगमन–निगमन विधि कहते है।
- ➢ गणित विषय सम्बंधी नवीन तथ्यो के लिए उपयोगी है।

परियोजना विधि

- ➢ परियोजना विधि के जन्मदाता अमेरिका के प्रसिद्व शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी के शिष्य सर विलयम किलपैट्रिक है।
- ➢ किलपैट्रिक [illegible] के अनुसार प्रोजेक्ट वह उद्देश्यपूर्ण कार्य है जिसे लगन के साथ सामाजिक वातावरण में किया जाता है।
- ➢ परियोजना विधि ही एक ऐसी विधि है जिसका प्रयोग करके लगभग सभी विषयो में शिक्षा दी जा सकती है।
- ➢ परियोजना विद्यार्थियो के वास्तविक जीवन से संबंधित किसी समस्या क हल निकालने के लिए अच्छी तरह से चुना हुआ तथा प्रसन्नतापूर्वक हाथ से लिया जानेवाला कार्य है जिसे पूर्ण स्वाभाविक परिस्थितियों में सामाजिक वातावरण मे ही पूर्ण किया जाता है।
- ➢ परियोजना के संचालन के लिए एक निश्चित क्रम का अनुकरण करना आवश्यक होता है – [illegible] परिस्थिति प्रदान करना, चयन और उद्देश्य, योजना, लागू करना या कार्यान्वित करना, मूल्यांकन, रिकॉर्ड करना।
- ➢ अच्छी परियोजना के गुण एव विशेषताएँ –
- ➢ परियोजना उद्देश्यपूर्ण एव लाभप्रद होने चाहिए।
- ➢ परियोजना से प्राप्त किये अनुभव लाभकारी होना चाहिए तथा परियोजना कार्य की स्पष्टता होनी चाहिए।
- ➢ परियोजना विद्यार्थी को मानसिक और शारीरिक रूप से व्यस्त रखे।

Scanned with CamScanner

- परियोजना सस्ती होनी चाहिए और उसमें समय भी कम लगना चाहिए। लेकिन परियोजना कार्य चुनौतीपूर्ण एवं उपलब्धि योग्य होना चाहिए।
- इस विधि में लोकतांत्रिक ढंग से सीखने की प्रक्रिया का विकास होता है।
- इस विधि में विभिन्न विषयों के साथ सह–सबंध स्थापित किये जाते है।
- इस विधि द्वारा समस्या समाधान के उपरान्त प्रसन्नता मिलती है तथा रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्रियाओं को बढ़ावा मिलता है।

प्रयोगशाला विधि ग्लकवअवतल वत भ्ग्चमतपउमदजंस उमजीवक्द्ध :–

- छात्र किसी विषय को पढ़कर नहीं वरन् करके सीखना चाहता है।
- प्रयोगशाला विधि में मुख्यतः करके सीखना ;स्मंतदपदह इल कवपदहद्ध, अवलोकन द्वारा सीखना ;स्मंतदपदह इल वइेमतअंजपवदद्ध तथा स्थूल से सूक्ष्म की ओर ;ब्वदबतमजम जव ।इेजतंबजद्ध आदि शिक्षण सूत्रों पर आधारित है।
- प्रयोगशाला विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान चिरकाल तक स्थायी होता है क्योंकि प्रयोग में हमारी समस्त इन्द्रियाँ क्रियाशील रहती है।
- प्रयोगशाला विधि में अध्यापक पृष्ठभूमि ;ठंबाहतवनदकद्ध में ओझल रहता है और समस्या स्थूल रुप में सामने रहती है।
- इस विधि में बालक के मस्तिष्क को पूर्णतः समझना चाहिए तथा शिक्षण का केन्द्र विषय–वस्तु या परीक्षा की तैयारी न होकर बालक की आवश्यकता एवं ग्रहण शक्ति होना चाहिए।
- प्रोफेसर यंग के अनुसार "विचारों का पृथक्करण एवं सामान्यीकरण नींव नहीं है, बल्कि अन्तिम उपज है।"

प्रयोगशाला विधि की विशेषताएँ :–

- यह विधि अल्पआयु के बालकों के लिए बहुत उपयोगी है।
- यह अन्वेषण करने की प्राकृतिक विधि है।
- इस विधि द्वारा शिक्षण के मुख्य उद्देश्य 'कौशल' को प्राप्त करने में पर्याप्त सहायता मिलती है।
- छात्रों में निरीक्षण एवं तर्क करने की क्षमता का विकास होता है।
- इस विधि द्वारा विज्ञान के नियमों, सिद्धांतों तथा परिभाषाओं का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करना संभव है।
- इसमें गुरु–शिष्य संबंध मधुर होते है।
- इस विधि में छात्र अपनी तीव्र ज्ञानेन्द्रियाँ– आँख, कान, हाथ के प्रयोग करके स्थायी ज्ञान प्राप्त करते है।
- मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह विधि अत्यंत उपयोगी है।

ह्युरिस्टिक विधि (Heuristic Method) :–

- भ्मनतपेजपब उमजीवक के जन्मदाता च्तवि भ्ण्म्ण्।तउेजतवदह (प्रो० एच.ई.आर्मस्ट्रांग) है।
- ह्युरिस्टिक विधि को अनुसंधान विधि या स्वयं ज्ञान विधि के नाम से भी जाना जाता है।
- सर्वप्रथम इसका प्रयोग विज्ञान शिक्षण के लिए किया गया परन्तु बाद में इसकी उपयोगिता को देखकर इसका प्रयोग अन्य विषयों में सफलतापूर्वक किया जाने लगा।
- भ्मनतपेजपब शब्द ग्रीक भाषा के श्भ्मनतपेबवश् शब्द से निकला है जिसका अर्थ है श्प् कपेबवअमतश् "मैं मालूम करता हूँ।"
- आर्किमिडीज ने जब अपने विशिष्ट भार के प्रसिद्ध सिद्धांत को मालूम कर लिया तब वह सड़क पर चिल्लाता भागा था युरेका–युरेका अर्थात मैंने मालूम कर लिया, मैंने मालूम कर लिया है। इसी कथा के आधार पर अपने आप सीखने की विधि को भ्मनतपेजपब विधि की संज्ञा दी गई है।

Scanned with CamScanner

- इस विधि का तात्पर्य बालकों को कम से कम बताने और स्वयं अधिक से अधिक खोजकर सत्य को पहचानने के लिए प्रेरित करने से है।
- हरबर्ट स्पैन्सर के अनुसार "बालकों को जितना कम से कम सम्भव हो बताया जाय और उनको जितना अधिक से अधिक सम्भव हो खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।
- प्रो० आर्मस्ट्रांग के अनुसार "अन्वेषण विधि वह विधि है जिसमें हम छात्र को अन्वेषक की स्थिति में रखते है।"
- ह्युरिस्टिक विधि की विशेषताऐं :–
- बालकों मे सत्य को जानने की उत्सुकता बनी रहती है तथा तथ्यों को ध्यानपूर्वक समझने की आदत डाल लेते है।
- विद्यार्थी, तथ्यों एवं प्रमाणों को तर्क वितर्क की कसौटी पर जाँचने के बाद ही स्वीकार करते है।
- इस विधि द्वारा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।
- विद्यार्थी नवीन ज्ञान की खोज स्वयं करते है। अतः ज्ञान स्थायी एवं व्यवहारिक होता है।
- इस विधि में बालको को गृह कार्य देने की आवश्यकता नहीं पडती है।
- अध्यापक छात्रों के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर सकता है।

प्रदर्शन विधि ;क्मउवदेजतंजपवद उमजीवकद्ध :–

- वैज्ञानिक घटना को दृश्य के रुप में प्रस्तुत करना तकनीकी भाषा में प्रदर्शन ;क्मउवदेजतंजपवदद्ध कहलाता है।
- इस विधि में मूर्त से अमूर्त ;ब्वदबतमजम जव ।इेजतंबजद्ध शिक्षण सुत्र का प्रयोग किया जाता है।
- प्रदर्शन विधि में शिक्षक छात्रों के सामने प्रयोग का प्रदर्शन करता है तथा प्रयोग से संबंधित विभिन्न पक्षों की व्याख्या प्रस्तुत करता है।
- प्रदर्शन के समय छात्र भी सक्रिय रहता है। इस प्रकार पाठ द्विपक्षीय हो जाता है।
- प्रदर्शन विधि में छात्रों की निरीक्षण एवं तर्क शक्ति का विकास होता है।

प्रदर्शन विधि के गुण :–

- प्रदर्शन के माध्यम से वैज्ञानिक घटनाओं का अधिक स्पष्टीकरण संभव है तथा घटनाओं का अधिक स्थायी प्रभाव छात्रों के मस्तिष्क पर छोडा जा सकता है।
- यह विधि मनोवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें स्मृति और कल्पना पर निर्भर रहने के बजाय छात्र वस्तु को मूर्त रुप में देखते है।
- प्रदर्शन द्वारा छात्रों को सुक्ष्म प्रेक्षण का अभ्यास कराया जा सकता है।
- शिक्षक के लिए समय और शक्ति की दृष्टि से प्रदर्शन अधिक उपयुक्त विधि है।
- यह विधि अन्य विधियों की अपेक्षा बहुत कम खीचती है।
- प्रदर्शन में परिणाम के तत्काल ज्ञान से छात्रों को प्रदान किये गये ज्ञान का पुनर्बलन होता है और उन्हें वैज्ञानिक सत्यों के अन्वेषण के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया जा सकता है।

व्याख्यान विधि ;स्मबजनतम उमजीवकद्ध :–

- व्याख्यान विधि शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि है। यह आदर्शवादी विचारधार की देन है।
- विद्यालयों एवं कॉलेजों में आज भी इस विधि का शिक्षण की दृष्टि से कम महत्व नही है। विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्यान विधि सबसे सरल विधि है।
- वस्तुतः यह एक एकमार्गी प्रक्रिया ;व्दम् ूंल ज्तंपिबद्ध है जिसमें अध्यापक मात्र प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल देता है।
- व्याख्यान विधि पूर्ण रुप से अध्यापक केन्द्रित विधि है तथा इसमें छात्र को स्वतंत्र रुप से अपनी शंकाओं को दूर करने के काई अवसर प्रदान नहीं किये जाते है।
- यद्यपि, व्याख्यान विधि को एक अच्छी विधि नहीं माना जाता है लेकिन इसका अर्थ यह नही है कि इस विधि की कुछ उपयोगिता नहीं है।

Scanned with CamScanner

- [illegible] ... करने में सहायक होती है।
- [illegible]

व्याख्यान विधि के गुण –

- व्याख्यान विधि बहुत ही [illegible] है क्योंकि इसमें एक ही [illegible] छात्रों को [illegible] करने में सहायक होती है।
- [illegible] समय की बचत [illegible] है।
- [illegible] तार्किक क्रम [illegible] से स्थापित किया जा सकता है।
- [illegible] विधि [illegible] अन्य [illegible] है।
- यह विधि अन्य विधियों की सहायक विधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

समस्या–समाधान विधि मनोवैज्ञानिक [illegible] –

- समस्या–समाधान विधि शिक्षकों की वास्तविक क्रिया पर आधारित है क्योंकि इस विधि में समस्या का [illegible] शक्ति के आधार पर वास्तविक रूप से समस्या का हल ढूंढ कर नवीन ज्ञान प्राप्त करता है।
- समस्या–समाधान विधि में शिक्षण को [illegible] इस प्रकार संचालित किया जाता है कि छात्रों को [illegible] एक वास्तविक समस्या [illegible] हो जाये।
- समस्या–समाधान विधि में वास्तविक क्रियाओं पर अधिक बल दिया जाता है। दूसरे शब्दों में विद्यार्थियों को समस्या में [illegible] अनुभव करना चाहिए।
- समस्या–समाधान विधि का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देना है न कि समाज की समस्याओं का समाधान ढूंढना।
- [illegible] के अनुसार समस्या–समाधान एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें सृजनात्मक चिंतन तथा तर्क [illegible] है।
- [illegible] के अनुसार समस्या–समाधान में वातावरण का नियंत्रण तथा [illegible] का आविष्कार सम्मिलित है।
- [illegible] के अनुसार समस्या–समाधान तब प्रकट होता है जब उद्देश्य की प्राप्ति में किसी [illegible] को बाधा [illegible] है। यदि लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग सीधा और आसान हो तो समस्या आती ही नहीं।

समस्या–समाधान विधि के गुण एवं विशेषताएं –

- छात्रों में चिन्तन शक्ति का विकास होता है।
- छात्रों में समस्याओं के वैज्ञानिक तरीके से समाधान खोजने की अभिवृत्ति तथा योग्यता का विकास होता है तथा आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।
- इस पद्धति से शिक्षण करते समय छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान रखा जा सकता है।
- समस्या–समाधान विधि सूझ–बूझ वाली विधि है।
- समस्या–समाधान विधि रचनात्मक है क्योंकि इसमें सही समाधान ढूंढने के लिए प्रयत्न तथा [illegible] अनुभवों को संचित [illegible] किया जाता है।
- समस्या–समाधान विधि आलोचनात्मक है क्योंकि इसमें समस्या के हल का मूल्यांकन किया जाता है।
- विश्लेषण विधि [illegible] –
- विश्लेषण विधि की सहायता से किसी भी समस्या के कठिन भाग का विश्लेषण [illegible] है कि इस समस्या का हल किस प्रकार प्राप्त किया जाये।